एक अजीबो-गरीब सरकार और केजरीवाल के 'खुलासा बम'

सोनिया-मनमोहन सरकार के कुछ मंत्री अजीबो-गरीब बातें करते हैं। और न सोनिया कुछ कर पाती हैं, न मनमोहन। 'राजकुंवर' राहुल कब जवां होंगे, समझ में नहीं आता सिर्फ दाढ़ी बढ़ा लेने से आक्रोश की अभिव्यक्ति नहीं की जा सकती। और 'राजकुंवर' किसके प्रति आक्रोशित हैं। क्या जनता के प्रति? जनता सरकार बदलेगी या सरकार जनता को ही बदल डालेगी? ब्रटोंल्ट ब्रेख्ट की एक छोटी-सी कविता में कुछ ऐसी ही स्थिति का व्यंग्यात्मक चित्रण किया गया है।

बहरहाल, राष्टपिता, राष्ट्र-माता के बाद 'राष्ट्र दामाद' की चर्चा है। हरियाण में ज़मीन हड़पने का जो 'बेहतरीन' काम राबर्ट वाड्रा ने किया, उसके बाद यह जुमला चल पड़ा। हुड्डा साहब ने सोनिया जी के प्रति अपनी वफ़ादारी दिखाते हुए एक आई ए एस अफ़सर को ठोक डालने की पुर जारे कोशिश की, पर ज़्यादा कुछ कर नहीं पाए। अफ़सर फ्लैट से निकल कर बंगले में चला गया।

इधर, अरविंद केजरीवाल साहब 'खुलासा बम' फोड़ते चले जा रहे हैं। माननीय विदेश मंत्री महोदय सलमान खुर्शीद साहब ने उन्हें ठोक डालने की खुली धमकी दी थी, पर वे फर्रूखाबाद में 'खुला खेल फर्रूखाबादी' कर चले आए। सलमान खुशीर्द साहब की बेगम साहिबा ने अपने एनजीओ के माध्यम से विक्लांगों की भलाई के नाम पर जो पैसा हड़पा, उसका खुलासा एक टीवी चैनल ने किया। इस पर सफाई देने के लिए सलमान खुर्शीद और उनकी बेगम साहिबा ने जिस प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया, उसमें वे लगातार 'पानी पीते' नज़र आये और सवालों के गोले जब दागे जाने लगे, सबूत पेश किए जाने लगे तो पत्रकार को 'देख लेने की' खुली धमकी उन्होंने दी, कोर्ट में घसीटने की बात कही... बड़े परेशान से नज़र आये, याद नहीं, कितनी बार पानी पिया। एक पत्रकार ने उन्हें पानी पिला दिया। पर न उन्हें शर्म आई, न मनमोहन को, न सोनिया को। संभवत: इस घोटाले को उनकी 'उपलब्धि' मानते हुए उन्हें कानून मंत्री से विदेश मंत्री बना दिया गया।

एक मंत्री महोदय ने फ़र्माया कि घोटाला लाखों में हुआ, करोड़ों में होता तो कुछ बात होती। सलमान खुर्शीद ने अपनी बेगम साहिबा के साथ मिलकर महज़ लाखों का घोटाला किया, यह उनकी शान के ख़िलाफ है। उन्हें करोड़ों में करना चाहिए था, सैकड़ों करोड़ का मामला होता तो शान में और कसीदे पढ़े जाते, पर स्कोप नहीं था। विक्लांगों के 'कल्याण' के लिए सरकार करोड़ों में धन आवंटित नहीं करती। बहरहाल, विदेश मंत्री बनने के बाद सलमान खुर्शीद साहब की शान बढ़ी है, इसमें कोई शक नहीं। उक्त मंत्री परेशान न हों, लाखों का घोटाला पकड़े जाने का यह अर्थ नहीं है कि उन्होंने सैंकरों करोड़ के घोटाले नहीं किये होंगे।

मनमोहन सरकार के एक और अति संवेदनशील मंत्री लोगों के खुले में शौच जाने से बहुत ही व्यथित हैं। तंग आ चुके हैं। सभी महानगरों में महिलाओं और पुरूषों का खुले में शौच करना आम नज़ारा है।

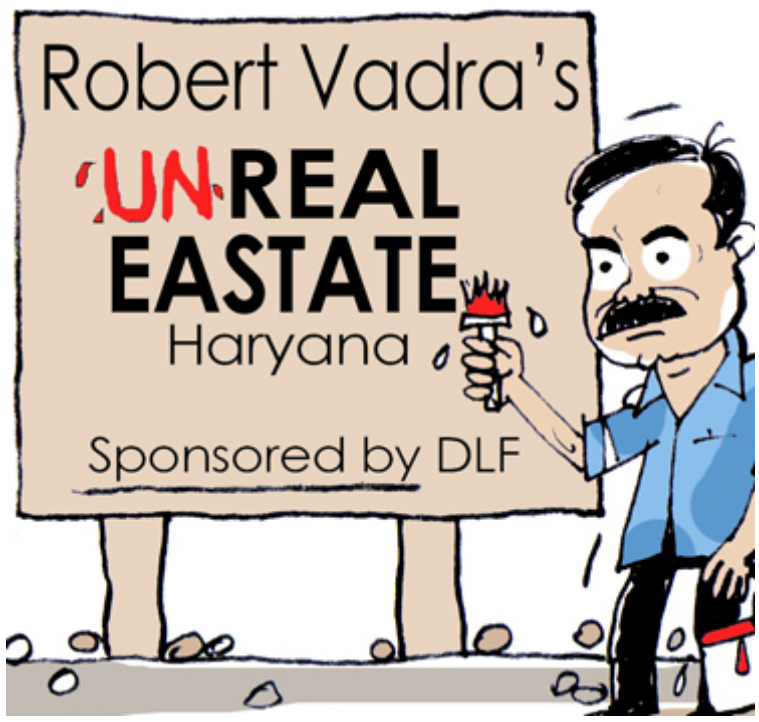

यह 'इंडिया' की शान के खिलाफ है। 'भारत' में चलेगा। देहातों में चलेगा। कोई विकल्प नहीं है। महानगरों में विदेशी मेहमान आते हैं। इन नज़ारों को कैमरों में कैद करते हैं और पूरी दुनिया में थू-थू होती है। सरकार को 'शर्म' आने लगती है। मंत्री महोदय का कहना है कि मंदिरों की जगह शौचालय बनाये जाने चाहिए। जरूर। ऐसा अवश्य किया जाना चाहिए पर करेगा कौन? लोगों के पास रहने की जगह नहीं, रोटी की किल्लत, पानी तक नहीं मिल पाता। महिलाएं क्या शौक से खुले में शौच करने जाती हैं? शर्म तो उन्हें भी आती है और ज़्यादा ही आती है। खुले में शौच करने में खतरा भी हैं, पर कोई क्या करें! मंत्री महोदय ने खुले में शौच करने वालों पर पचास हज़ार जुर्माना लगाने की बात भी कही है। पचास रुपये जेब में नहीं होते, पचास हज़ार तो सपना होता है। मंत्री महोदय ने कहा है कि वे खुले में शौच करने वालों को जेल भेजेंगे। यह अच्छा है। वहां रोटी और शौचालय, दोनों का इंतजाम रहेगा। ऐ मंत्री महोदय ने कुछ दिन पहले कहा था कि महंगाई जितनी बढ़े, उतना ही अच्छा है। कैसे? यह खुलासा नहीं किया। इसलिए, इस पर कुछ ज़्यादा कह पाना संभव नहीं है। इन्होंने ही कहा है कि अगले चुनाव में यूपीए को जीत नहीं मिलने वाली है। आडवाणी पहले ही कह चुके हैं कि एनडीए भी जीत पाने की स्थिति में नहीं हैं। अरविंद केजरीवाल ने भाजपा अध्यक्ष नितीन गडकरी पर भी एक 'खुलासा बम' फोड़ा। उम्मीद थी कि इसके बाद उनसे इस्तीफ़ा ले लिया जाएगा। वे मुंबई से उड़कर दिल्ली आए। समर्थकों की भीड़ थी उनके साथ। वे लगातार मुस्कुरा रहे थे। बेशर्मी की भी एक हद होती है। एयरपोर्ट से वे सीधे मीटिंग में पहुंचे। मीडिया कयास लगा रहा था कि वे इस्तीफ़े की पेशकश करेंगे। पर संघ ने उन्हें अभयदान दे दिया। वे फ़िर एक बेशर्म हंसी के साथ मीटिंग से निकले।

अरविंद केजरीवाल ने एक और 'खुलासा बम' मुकेश अंबानी पर फोड़ा। तथ्यों के साथ सप्रमाण। कहा कि मनमोहन की सरकार को मुकेश अंबानी चला रहे हैं। अंबानी साहब नाराज़ हो गए। केजरीवाल ने जो कुछ कहा, सप्रमाण कहा है। सरकार इस पर मौन है। मनमोहन सायलेंट मोड में हैं, और सोनिया भी। इधर, मुलायम सिंह प्रधानमंत्री बनने की जुगत में लगे हैं। यू पी अखिलेश के संभाले संभल नहीं पा रहा। लंबे अर्से से वामपंथी मौन हैं। पता नहीं, अंदरखाने कैसी पॉलिटिक्स कर रहे है? 2014 अब दूर नहीं।

-मनोज कुमार झा

आईपीएल क्रिकेट मैच पूंजी का खेल

विवादों से भरा पांचवा इन्डियन प्रीमियर लीग (आईपीएल)27 मई 2012 को कोलकाता नाईट राईडर्स की जीत के साथ खत्म हुआ। वैसे तो आईपीएल की शुरुआत ही कॉरपोरेट सट्टेबाजी के रूप में हुई थी और तभी इसकी विश्वसनीयता पर गम्भीर सवाल उठे थे। लेकिन इस बार मैदान और मैदान से बाहर यह लगातार सुर्खियों में रहा। बीते दिनों जिस तरह की घटनाएं घटी, उसने क्रिकेट को कलंकित किया। इनमें कोलकाता नाईट राईडर्स के मालिक शाहरुख खान की वानखेड़े स्टेडियम के सुरक्षा अधिकारियों के साथ मारपीट, बंगलुरु के एक खिलाड़ी का एक महिला के साथ छेड़खानी और इसके मालिक की मीडिया वालों से बदतमीजी, मुंबई में एक पार्टी में पुलिस द्वारा दो खिलाड़ियों की नशे के आरोप में गिरफ्तारी, एक स्टिंग ऑपरेशन ने पांच खिलाड़ियों का स्पॉट फिक्सिंग में लिप्त पाया जाना प्रमुख हैं।

आज आईपीएल के नाम पर जो तमाशा हो रहा है और बाजार जिस तरह से अपनी जकड़ ले चुका है, वहां खेल कहीं पीछे छूट गया है। क्रिकेट के नाम पर हो रहे मनोरंजन से खेलों का आदर्श पूरी तरह मटियामेट हो गया है और आइपीएल दुनिया भर के सट्टेबाजों के लिए धन लगाने का एक ठिकाना बन गया है जिसमें नेता, अभिनेता, पूंजीपति, मीडिया, तथा परजीवियों का पूरी जमात शामिल है। क्रिकेट का खेल हमारे देश में मनोरंजन का बेहद महंगा साधन हैं। ज्यादातर लोग इसे खुद नहीं खेलते बल्कि दूसरों को खेलते देखते हैं। कुछ मुट्ठी भर रईस लोग ही इस खेल में प्रत्यक्ष हिस्सेदारी कर पाते हैं। बाकी करोड़ों लोग इसे टीवी पर ही देख पाते हैं। फिर भी क्रिकेट का जुनून करोड़ों के सर पर सवार है और यही कारण है कि आज आईपीएल एक ऐसे साधन के रूप में आ गया जो मुनाफाखोरी का जरिया बन गया। नैतिकता को शर्मशार करती ऐसी घटनाओं के बावजूद इसका फलना-फूलना यही दर्शाता है।

अभी पांच खिलाड़ियों पर पैसे के लेन-देन के आरोप लगे। यह स्टिंग ऑपरेशन पिछले आईपीएल के दौरान यानी 2011 में हुआ था। इन सभी खिलाड़ियों को मैच फिक्सिंग में लिप्त मानते हुए भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने निलंबित कर दिया था। बीसीसीआई भारत जैसे ग़रीब देश में विश्व के सबसे धनी खेल संघों में से एक है और देश-दुनिया के धनकुबेरों द्वारा खिलाड़ियों की ऊंची-ऊंची बोलियां लगवाती है। ऐसे में इन खिलाड़ियों से खेल के किस आदर्श की उम्मीद की जा सकती हैं। जिस खेल में धन लोलुप्ता ऊपर से नीचे तक सभी को अपनी गिरफ्त में ले चुकी है वहां खिलाड़ी ही भला क्यों पीछे रहें? वे जल्दी से जल्दी और अधिक से अधिक पैसा बनाना चाहते हैं। इसके लिये वे किसी भी हद तक नीचे गिरने को तैयार हैं। वे भ्रष्ट मंत्रियों और नेताओं का अपना आराध्य मानते है और उन्हीं के रास्ते का अनुसरण करना चाहते हैं। यह तो है क्रिकेट की हालत, लेकिन हमारे देश में अन्य खेलों की स्थिति क्या है? स्वास्थ्य और मनोरंजन के हिसाब से

क्रिकेट को खेल के रूप में नहीं, बल्कि व्यापार के रूप में स्थापित किया जा रहा है जिसका उद्देश्य मुनाफा कमाना है।

देखा जाय तो कोई भी छोटा या बड़ा नहीं होता। सभी का उद्देश्य शारीरिक तथा मानसिक विकास करना है। मगर हो इसका उल्टा ही रहा है। क्रिकेट के विपरीत अन्य खेलों, जैसे-कबड्डी, वॉलीबॉल, फुटबाल, हॉकी, तीरंदाजी, बेसबॉल आदि को हाशिये पर फेंक दिया गया है। कारण यह कि अन्य खेल क्रिकेट की तरह रंगारंग मनोरंजन करने तथा मुनाफा देने वाले नहीं हैं।

क्रिकेट आज अरबों-खरबों का व्यापार बन गया है। इसमें विज्ञापन के साथ-साथ देशी-विदेशी कम्पनियों की दखलंदाजी तेजी से बढ़ रही है। दूसरी ओर हॉकी, कबड्डी, तीरंदाजी, बेसबॉल, वालीबॉल जैसे खेलों का आयोजन करने के लिए प्रायोजक ही नहीं मिलते हैं। ये सभी तथ्य अलग-अलग खेलों के प्रति जबरदस्त उपेक्षा को उजागर करते हैं।

अभी पिछले दिनों विश्व शतरंज का किताब जीत कर लौटे विश्वनाथन आनंद और इंडोनेशिया ओपन जीतकर लौटी सायना नेहवाल का स्वागत करने के लिए फेडरेशन के अधिकारी और कुछ रिश्तेदार ही मौजूद थे। लेकिन कोलकाता नाईट राईडर्स की जीत के जश्न पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने ईडेन गार्डेन मैदान में भव्य स्वागत समारोह आयोजित किया। एक घरेलू और वह भी व्यावसायिक क्लब की जीत पर इतना सरकारी धन खर्च करने का औचित्य पर सवाल उठना लाजिमी है।

वैसे तो क्रिकेट का खेल ही उपनिवेशवादी अंग्रेजों की खोज है और आज भी उन्हीं देशों में खेला जाता है जो कभी ब्रिटेन के गुलाम थे। हमारे देश में भी इसकी शुरुआत अंग्रेजी राज में ही अंग्रेजों, उनके चाटुकारों और राजा-रजवाड़ों ने की थी। आज भी औपनिवेशिक गुलामी का हमारे शासक वर्ग पर काफी असर है। इसी का सबूत है कि आजादी के बाद हॉकी को राष्ट्रीय खेल का दर्जा मिलने के बावजूद अन्य खेलों की तुलना में सिर्फ क्रिकेट को ही बढ़ावा दिया जाता है। 90 के दशक में साम्राज्यवादी वैश्वीकरण का हिस्सा बनने और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के आने के साथ ही उनके विज्ञापन और मुनाफे का जरिया बन गया। लोगों के दिमाग में क्रिकेट का जूनून भरने के लिए हर तरह के उपाय किये गये। टीवी, रेडियो, अखबार, और पत्र-पत्रिकाओं को क्रिकेट के प्रचार में लगा दिया गया। हर मैच का सीधा प्रसारण और उस पर लम्बी चर्चाएं की गयीं। इस तरह क्रिकेट को देश की अस्मिता और क्रिकेट खिलाड़ियों को देश के नये नायकों के रूप में भारतीय समाज में आरोपित कर दिया गया। सरकार द्वारा आईपीएल को प्रोत्साहन दिये जाने का फायदा देशी-विदेशी थैलीशाहों को मिला जो अपने काले धन को आईपीएल मैचों में निवेंश करतें हैं और गढ़े गये नायकों द्वारा अपने माल का प्रचार कराते हैं। मैच के दौरान दो देशों यहां तक कि देश के दो इलाकों के बीच उन्माद का माहौल बनाकर दर्शकों की संख्या बढ़ायी जाती है, ताकि उनके आगे विज्ञापन परोसा जाये। सरकार क्रिकेट का व्यापार करने वालों के आगे नतमस्तक रहती है और उन्हें कई तरह की छूट देती है। भुखमरी के दौर में भी खाद्य सहायता राशि और अन्य सुविधाओं में कटौती करके बचाया गया धन क्रिकेट मैच की रौनक बढ़ाने में झोंक दिया जाता है।

आज क्रिकेट को खेल के रूप में नहीं, बल्कि ऐसे व्यापार के रूप में स्थापित किया जा रहा है जिसका उद्देश्य मुनाफा कमाना और लोगों का ध्यान बंटाना है। तभी तो हमारे नौजवान गरीबी, बेरोजगार और भुखमरी जैसी असली समस्याओं पर विचार करने के बजाय क्रिकेट के नशे में चूर रहते हैं। जैसे-जैसे देश में अमीरी-गरीबी के बीच की खाई बढ़ी है, वैसे-वैसे खेल-खेल के बीच की खाई चौड़ी होती गयी है। गरीब परिवारों को दो जून की रोटी जुटाने के लिए दिन-रात खटना पड़ता है। उनके जीवन में मनोरंजन और खेल के लिए कोई जगह नहीं है। दूसरी ओर परजीवी वर्गों की दुनिया और भी रंगीन और लुभावनी होती जा रही है क्रिकेट भी उनकी अभिजात ज़िंदगी का हिस्सा है। उनके जूठन के रूप में निचले पायदान पर खड़े लोग भी उसका दूर-दूर से मजा ले लेते हैं। छात्र-नौजवान इस नशे से दूर रहकर ही अपने भविष्य को संवारने का सपना देख सकते हैं और उसे जमीन पर उतार सकते हैं। ■